Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 5, Nov. 2012
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

क्रान्तिकारी विचारक विवेकानन्द के जीवन पर आधारित उपन्यास 'न भूतो न भविष्यति ' में यथार्थ का चित्रण

जस्सी जोस

सहायक प्राध्यापक क्राइस्ट कॉलेज, जगदलपुर (छततीसगढ)

सारांश :

इस उपन्यास में स्वामी जी के लक्ष्य, कर्म और संघर्षों का यथार्थ वर्णन किया गया है। इस सर्वस्वत्यागी जीवन में यदि अब भी वे किसी से प्रेम करते थे तो वह भारत था; और यदि उन्हें कोई दुःख था, तो भारत माता तथा उसकी संतान के अभावों और अपमान का दुःख था।

प्रस्तावना :

नरेन्द्र को ईश्वर प्राप्ति के लिए तड़प का यथार्थ वर्णन किया गया है। वह नौकरियों के लिए पढ़ना नहीं चाहता। पद के लिए अंक ठीक है। प्रतिभा के लिए नहीं। प्रतिभा को ज्ञान चाहिए। अंक दूसरों को प्रभावित करने के लिए होते हैं, ज्ञान अपने परितोष के लिए यह आज के यथार्थ को चित्रित करता है। नरेन्द्र की ईश्वर प्राप्ति की खोज ठाकुर पर जाकर खत्म होती है। ठाकुर की दृष्टि में नरेन्द्र जन्म से ही ध्यानसिद्ध था। ईश्वर के लिए कौन इतना तड़पता है। लोग स्त्री, पुरुष, पुत्र के शोक में घड़ो आंसू बहाते हैं। विषय और धन के लिए तरसते हैं। किंतु ईश्वर के दर्शन नहीं हुए– कहकर कौन रोता है। कौन कहकर दुःखी होता है। किंतु नरेन्द्र के स्वर में वास्तविक दुख था। उसके मन की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है।

कोहली जी ने नरेन्द्र की पारिवारिक स्थिति को यथार्थ रूप में चित्रित्र किया है। नरेन्द्र के पिता की मृत्यु हो जाती है। अब उसे घर का भी पालन–पोषण करना है। समाज के बीच रहकर व्यक्ति जिम्मेदारियों से मुँह नहीं मोड़ सकता। किंतु नरेन्द्र की त्याग भावना कुछ अधिक ही मुखर हो गई थी। उसकी माता भुवनेश्वरी को तो चिंतित होना ही था। उसे तो बस जीवन चलाना था, संसार नहीं चलाना था। नरेन्द्र के घर की परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन किया गया है। कभी–कभी घर में एक दाना अनाज का नहीं होता था, किंतु इन सब परिस्थितियों से बेखबर नरेन्द्र अपनी ही धुन में मगन था। भक्त को तो भगवान ही चाहिए, और कुछ भी नहीं। अपनी आजीविका भी नहीं, अपना जीवन भी नहीं। वह भगवान को पाने के लिए कुछ भी छोड़ सकता है, कुछ भी। नरेन्द्र में और लोगों में एक मूलभूत अंतर था वह कठोर और निर्मोही था। उसे संसार की माया तनिक भी नहीं व्यापती थी, धन, रूप, यौवन– उसे कुछ भी भयभीत नहीं करता था। निर्धनता, असहायता, भूख, रोग, अभाव– उसे कुछ भी भयभीत नहीं करता था। संन्यास धारण करने के बाद स्वामी जब विदेश गए तो वहां भी उनके विचारों से विदेशी भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके थे, और अधिकाधिक उनके शिष्य बनते जा रहे थे।

ठाकुर के शिष्यों को ठाकुर के भीतर ऐसा आध्यात्मिक प्रकाश दिखाई देता था कि उनकी दुषचिंताएं जाने कहाँ चली जाती थीं। हृदय नवीन उत्साह से परिपूर्ण हो जाता था। ठाकुर ठीक ही कहते थे कि एक बार बाल–बच्चे हो जाए तो उनकी माया ऐसी प्रबल होकर व्यक्ति के मन और बुद्धि पर पर्दा डालती है कि मनुष्य को ईश्वर के स्थान पर अपनी संतान ही दिखने लगती है। माता–पिता यह तो चाहते हैं कि उनके लड़के धार्मिक हों किंतु, जब कोई सचमुच ही धर्म की ओर चल पड़ता है, तो वे उसे वापस संसार में खींच लाना चाहते हैं। ठाकुर को जो भीषण व्याधि हुई थी, उससे उन्होंने शरीर छोड़ने का संकल्प किया है या नहीं उनके शिष्य भी नहीं जानते थे। किन्तु समय रहते ही वो उनकी सेवा और ध्यान–भजन करके, जहाँ तक हो सकता था आध्यात्मिक उन्नति कर लेना चाहते थे, नहीं तो उनके चले जाने पर पश्चाताप के बिना कुछ नहीं रहेगा। ठाकुर के न रहने के बाद सब शिश्य अपने–अपने घर चले जाते हैं किंतु सब का भार नरेन्द्र पर था और सब संन्यास ले चुके थे। नरेन्द्र एक–एक कर सबको घर से मठ में लाने का प्रयास करता किंतु उनके माता–पिता नहीं चाहते थे कि वे लोग पुनः घर छोड़ जाएं। नरेन्द्र उनके लिए विध्न स्वरूप था। भुवनेश्वरी देवी नाराज होती हैं, कोई तुम्हारा इतना अपमान और अनादर करता है, और तू उनके आध्यात्मिक प्रयत्न में लगा है। वे तेरा मुख नहीं देखना चाहते हैं, और तू उन्हें परमार्थिक ज्ञान देने पर तुला है। किंतु नरेन्द्र इसे अहंकार की माया कहते हैं। नरेन्द्र ने जीवन के यथार्थ को स्वीकार कर लिया था।

स्वामी अपने भक्तों को बताते हैं कि हमें इस संसार में रहकर भी नैतिकता की रक्षा करनी चाहिए। नौकरी किसी की भी करो किंतु एक बात स्मरण रखो कि तुम जिसके पास नौकरी कर रहे हो, वह तुम्हारा स्वामी है, किंतु तुम्हारा स्वामी एक और भी है। वास्तविक स्वामी वही है। उसने तुमको यह जीवन दिया है और इस सृष्टि की रचना की है। नौकरी किसी की भी करो; किंतु अपने वास्तविक स्वामी की आज्ञाओं के विरूद्ध मत जाओ। स्वामी अपनी संपत्ति अर्जित कर सकते, इससे पूर्व ही प्रभु ने उनके पिता की सारी संपत्ति का हरण कर उन्हें भिक्षुक बना दिया था। उनके लिए स्पष्ट संकेत था। प्रभु स्वंय कह रहे थे कि उनके सम्मुख संन्यास के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं था। जिसका तिरस्कार संसार करता है, वह संन्यासी नहीं बनता, भिखारी चाहे बन जाए। संन्यासी वह बनता है, जो संसार का तिरस्कार कर सकता है। जिसके सामने स्वंय संसार भिखारी बन जाता है। स्वामी जी का अखण्ड ब्रह्मचर्य आज भी लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। वह हमारे भारत की अमूल्य संपत्ति हैं।
स्वामी के कुछ भक्तों ने स्वामी से कहा भी था कि आप यदि प्रयत्न करे तों, हमसे भी अधिक धन अर्जित कर सकते हैं। किंतु स्वामी को धन की कोई आवश्यकता नहीं। लोग इतने कष्ट से उपार्जन करते हैं। उसका बहुत थोड़ा सा अंश, अपने लिए व्यय करते हैं, शेष का अंश उनके लिए व्यय करते हैं जिन्हें अपना समझते हैं। वे लोग उसके लिए न आभार मानते हैं और न उतने संतुष्ट होते हैं, जितना लोग व्यय करते हैं। जो राशि

लोग कौड़ी–कौड़ी जोड़ते हैं, उसका उनके बाद कोई और उपभोग करेगा और बहुत संभव है कि यह कह कर निन्दा करे कि तुम उसके लिए इतनी कम राशि छोड़ कर गए। संन्यासी कोई परिश्रम नहीं करता। भूख लगने पर पेट पर हाथ रखकर हाथ को मुँह के पास ले जाकर, संकेत भर कर लेता है। जो पाता है, सो खाता है कुछ भी संग्रह नहीं करता। दोनों में से कौन बुद्धिमान है। स्वामी अपने तर्कों से श्रोताओं को निरूत्तर कर देते थे। और उनको जीवन के यथार्थ से परिचित करा देते थे।

स्वामी विदेश जाकर भी अपने धर्म का उन्हें ज्ञान कराते हैं। धर्म सब समान है धर्म तो सिखाता है कि संसार भर के प्राणी हमारी ही आत्मा के विविध रूप हैं। वे नहीं समझते कि दोश धर्म का नहीं है। वे विचारवान होकर भी नहीं समझते कि इस हीन अवस्था का कारण है– धर्म पर आचरण नहीं करना। समाज में सहानुभूति का अभाव। अपने जीवन में निरंतर ईश्वर की खोज करना, उसको पहचानना, निरंतर उसके निकट जाना, उसके समान होने का प्रयत्न करना और फिर वही हो जाना– हिंदू धर्म है। धर्म की यथार्थ व्याख्या प्रस्तुत की है।

स्वामी ने विदेश में वहां की महिलाओं को ही वहां की आत्मा माना है। जैसी महिलाएं इस देश में थीं, संसार में कहीं नही थीं। निर्मल, स्वतंत्र, आत्मविश्वासी, दयालु। महिलाएं ही उस देश की आत्मा और जीवन थीं। सारी विद्या और संस्कृति उन्हीं में संचित थी। वह वहाँ की महिलाओं को देखकर अवाक रह गए। स्वामी ने अठारह वर्ष की अवस्था में संन्यास लिया था। संन्यासी का अपना कोई परिवार नहीं होता। वह कंचन कामिनी से दूर रहता है। संन्यासी स्त्री से दूर नहीं रहता। कोई अपनी माता से दूर कैसे रह सकता है। वह स्त्री के कामिनी रूप से दूर रहता है। उसके लिए तो प्रत्येक स्त्री माता के समान है। स्वामी ने विदेश में अपनी प्रतिभा से अपने अनेक शिष्य बना लिए थे। जो भारत की संस्कृति व भारत के धर्म के बारे में नया ज्ञान प्राप्त कर रहे थे। विदेशी साम्राज्य ने भारत के सामाजिक ढाँचे और जीवन–शैली को प्रभावित किया था। चारों ओर से मूल्यहीनता की स्थिति थी और समाज सही वैचारिक नेतृत्व के अभाव में किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था। ऐसे में स्वामी विवेकानन्द के प्रेरणास्पद विचारों ने दिशा–निर्देश किया। इस उपन्यास में स्वामी जी के जीवन में किए गए कर्मों का यथार्थ विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ .

1.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – सिद्धांत और साहित्य   पृष्ठ सं.– 9 –10
2.नरेन्द्र कोहली – न भूतो न भविष्यति   पृष्ठ सं.– 184ए 374 , 563
3.श्री शिवपूजन सहाय – शिवपूजन रचनावली   पृष्ठ सं.– 7

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net